बैर्नहार्ड लिन्के के मेरे नाम लिखे एक्समस कार्डस प्रमोद कुमार सिंह

Genieße Dein Leben ständig
Du bist länger tot als lebendig

एक

एक अनमोल भेंट

प्रिय प्रमोद!

एक्समस और आने वाले नये वर्ष के लिए तुम्हे मेरी और मोनिका की शुभकामनायें।तुम्हारा कार्ड हमे भी मिला।दरअसल दो दिलों को सिर्फ भाषा और ऑखे ही एक दूसरे के करीब ले आती हैं।ये दोनो चीजें तुम्हारे पास हैं।अपने ईश्वर से हमारी पहली प्रार्थना तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए है।बाकी चीजें जीवन मे आती जाती रहती हैं।

इस कार्ड मे मै तुम्हे अपने जीवन की एक बेहद ही सुन्दर घटना सुनाने जा रहा हूँः

मै एक गरीब किसान परिवार मे पैदा हुआ था।मुझसे दो वर्ष बड़ा एक भाई थाःएवरहार्ड।हम एक जन्गल से लगे छोटे से गॉव मे रहते थे.जहॉ बड़ी घोर गरीबी थी।खाने तक के लाले पड़े रहते थे।एक्समस पर मिलने वालों उपहारों से हम नितान्त अपरिचित थे।

एक्समस के त्यौहार को हम सिर्फ एक रूप मे जानते थे।पहले पूरे घर की सफाई.फिर मॉ बाप के संग एक्समस के गाने गाना और उनसे एक्समस की कहानियॉ सुनना।शाम को मॉ हमारे लिए एक्समस की मेज भी सजाती थी।इस शाम हम पेट भर के खाने खा सकते थे।

जब मै सात साल का था.तब एक्समस पर अचानक बीमार पड़ गया।बुखार उतरने का नाम ही न ले रहा था।पहली बार मुझे और एवरहार्ड को पिताजी से एक हृदयाकार फेफरकूखेन भेंट मे मिला.जो चीनी की चासनी से अलंकृत किया गया था।ःएक प्रकार का बिस्कूट.जिसमे काली मिर्च डाली जाती हैः।ये हमारे जीवन का पहला एक्समस प्रेजेन्ट था।मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे हॉथ मे इस दुनिया की कोई सर्वोतम वस्तु आ गई हो।मै इसे खाना नही चाहता था.या फिर चाहने पर भी मै इसे नही खा सकता था।बड़ी सावधानी से उठ कर मैने उसे अपने बिस्तर के बगल के ताखे पर सजा दिया और फिर अपने बिस्तर पर आ कर उसे निर्निमेष देखता रहा।उसे पाने की मुझे अपार खुशी थी।मुझसे सोया भी नही जा रहा था।

जब अन्धेरा हुआ.तब मॉ हमारे कमरे मे आई।पहले उन्होने मुझे चूमा.फिर एवरहार्ड को.फिर वो कमरे की ढिवरी बूझा कर सोने चली गई।

नींद मेरी ऑखो से हजारो कोसों दूर थी।आधी रात को अचानक मेरा भाई अपनी बिस्तर से उठा और दबे पॉव मेरे ताखे की तरफ बढा।मेरा दिल धक्क करके रह गया।मेरा अपना सगा बड़ा भाई मुझसे वो चुराने बढ रहा था.जो मेरे जीवन की एक अनमोल भेट थी।मैने उसे न रोका और न टोका।वो एक ऐसा अपराध करने जा रहा था.जिसकी मेरे पास कोई क्षमा ही न थी।चुपचाप मै करवट बदला और दबी आवाज मे फफक फफक कर रोने लग पड़ा और सुवह तक रोता रहा।

मेरा भाई जग कर पिताजी के साथ उनकी मदद करने खेतो मे जा चुका था।मै करवट बदल कर उस खाली ताखे को देखना ही नही चाहता था।मेरे पास इतनी हिम्मत भी न थी।तभी मुझे मॉ के सिसकने की आवाज सुनाई दी।झटपट मैने करवट बदली।देखा मेरे ताखे पर दो फेफरकूखेन पड़े हैं और मॉ एक मुचड़े चिमड़े कागज पर कुछ पढे चली जा रही हैं और रोये चली जा रही हैं।मै घबरा गया और मॉ से पूछा कि वो क्यों रो रही हैं!

चुपचाप वो कागज मुझे पकड़ा कर मेरे पायताने बैठ गई।इस कागज पर एक हरे रंग का एक्समस ट्री बना हुआ था.जिसकी डालियों को न जाने कितने सफेद सितारों से सजाया गया था।इस पर मेरे नाम एक छोटा सा पत्र भी थाःप्रिय बैर्न!तुम जल्दी से अच्छे हो जाओ।तुम्हारे अलावे मेरे पास दूसरा कोई दोस्त भी नही है।मै अपना फेफरकूखेन तुम्हे भेंट मे दे रहा हूँ।उसे खा लेना और अपना वाला जीवनपर्यन्त देखते रहना।तुम्हारा भाईःएवर।

मै अपनी मॉ के सीने से लग कर फूट फूट कर रोने लग पड़ा।

प्रमोद!ये मेरी जिन्दगी का एक अनमोल एक्समस प्रेजेन्ट है.जो मुझे आज से सतहत्तर वर्ष पहले मिला था।

तुम्हाराः

बैर्नहार्ड लिन्के।

सभी हत्यारे नही थे

प्रिय प्रमोद

तुम्हारा इमेल हमे मिला। बहुत बहुत धन्यवाद, तुम्हे भी मेरी और मोनिका की तरफ से एक्समस पर शुभकामनायें। आने वाला नया वर्ष गुजर कर जाने वाले वर्ष की तरह ही तुम्हारे जीवन मे कुछ लायेगा तो कुछ ले भी जायेगा। मै और मोनिका अपने ईश्वर से इस बात की प्रार्थना करेंगे कि वो तुम्हे बस दिया करें, तुमसे कुछ लिया न करें।

मै अपने अतीत के बारे मे मोनिका के अलावे किसी से बात नही करता। तुम एक अपवाद हो। तुम अक्सर मुझसे पूछते हो कि सेकेन्ड वर्ल्ड वार मे मेरे हॉथों कितने लोग मरे या फिर मैने कितनों को मरते देखा है!ये बात शायद तुम्हे परेशान करती है, तभी तुम अक्सर ये सवाल मुझसे पूछते हो। तो सुनो!अब मुझे न तो इनकी संख्यायें याद है और न ही इनका मरना। बस मुझे ये याद है कि मैने इस प्रोफेशन को कब छोड़ा और क्यों छोड़ा!

इस प्रोफेशन मे मुझे अपने परिवार की गरीबी की वजह से आना पड़ गया था। उन दिनो मै चौदह वर्ष का था। अडोल्फ हिटलर सत्ता मे आ गया था। दवा के कैडेट स्कूल खुल रहे थे। ऐसा ही एक स्कूल स्टैंडाल मे भी खुला। मै उसमे भर्त्ती हो गया। दो वर्ष की ट्रेनिन्ग के बाद मै एक पेशेवर सोल्जर था। सेकेन्ड वर्ल्ड वार डिक्लेयर किया जा चुका था। मुझे पोलेन्ड के फ्रन्ट पर भेज दिया गया। मेरे ग्रूप मे बीस सोल्जर्स थे, जो मेरे ही उम्र के थे। कमान मेरे हॉथों मे था। ठीक मेरे नीचे मेरे गॉव का ही एक लड़का फ्रिडरिक भी था।

पोलेन्ड की आर्मी बेहद कमजोर थी, पर इनके सिविलियन्स हमारी नाक मे दम किये हुए थे। आर्मी मे आये मुझे नौ महीने हो चले थे। हम उन दिनो जिलोनी गोरी नाम के गॉव मे थे। एक किसान के टूटे फूटे लकड़ी के घर मे हमारा ठिकाना था। मेरे दल का अभीं तक कोई मरा तो नही था, पर दो बेहद घायल थे।

एक दिन गई रात को हमे ऐसा लगा कि हमे चारो तरफ से घेरा जा रहा है। पहरे पर मै और फ्रिडरिक थे। बाकी सो रहे थे।

बाहर धूप्प अन्धेरा छाया हुआ था। इसके पहले कि हम पर कोई हमला होता, मुझे फायरिंग करवानी पड़ गई। हम हर खिड़की पर जा डटे। आधे घन्टे तक हम अन्धी फायरिंग करते रहे, जो एक तरफा ही था। मेरा दिमाग चकराया। मैने फायरिंग रूकवा कर सभी को आड़ मे जाने को कहा। सुबह तक हम इन्तजार करते रहे, पर हम पर कोई फायरिंग नही की गई। सुबह के उजाले मे जब हम सशत्र बाहर आये तो देखे कि चारो तरफ छोटे छोटे उम्र के लड़के और लड़कियॉ मरे पड़े हैं। किसी के हॉथ मे आलू काटने वाला चाकू है, तो किसी के हॉथ मे गुलेल।

फ्रिडरिक मेरे फैसले के खिलाफ था और ये ऐसे भी अपने देश से गद्दारी थी। हमारे पास जरूरत से ज्यादे हॅथियार और रसद थे, फिर भी उन्हे मैने एक अन्धे कुॅए मे फिंकवाया और अंग्रेज सिपाहियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। वर्षो तक हम कैरो मे बन्दी रहे। मेरे दूसरे साथियों को सन बावन मे जर्मनी वापस कर दिया गया। मै सन चौवन मे रिहा किया गया। पिताजी गुजर चले थे। मॉ एवरहार्ड के साथ रह रही थीं। फ्रिडरिक को लेहनीन मे एक अच्छी नौकरी मिल गई थी और हानेलोरे अब उसकी पत्नी थी। हानेलोरे मेरे बचपन की सहेली थी। उससे मैने शादी करने का वायदा किया हुआ था।

कई बार हमारी जानें भी खतरे मे आई। हमे शोले उगलने पड़े। इन शोलों की रोशनियों मे मैने कईयों को मरते देखा, पर इन मौतों को मैने मौत की शक्ल मे कई वजहों से नही देखा। परन्तु जिलोनी गोरी के लड़के लड़कियों की मौत और उनके मॉ बाप का आर्त्तनाद मेरे लिए एक दुःस्वप्न ही बन गया और आये दिन रातों मे मुझे डराता रहा और आज तक डराता है।

मेरी तबीयत की तुम इतनी चिन्ता नही किया करो। मै अस्सी वर्ष का हो गया। अब बस आने वाले तिथियों मे अपने मौत की तिथि ढूॅढता रहता हूॅ।

मोनिका अच्छी तरह से है। वो तुम्हे नमस्ते कह रही है। तुम्हारा जब भी मन करे, हमसे मिलने आ जाया करो। अब मुझसे तुम्हारे घर की सीढियॉ नहीं चढी जाती है। आने वाले गर्मियों मे मै तुमसे मिलने अक्सर तुम्हारे बगान मे आया करूॅगा।

अपना खयाल रखना।

तुम्हारा

वैर्नहार्ड लिन्के